डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी० एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट , खुटौना
मो० न० 9546743796, 9434306082
Email - mishrasm966@gmail.com
B. A .

भाषाविज्ञान विज्ञान अछि वा कला

भाषा मानवक विचारक आदान - प्रदानक साधन अछि । वास्तविक मे भाषाक काया मे आवेष्ठित भए विचार हमरा सभक समक्ष अबैत अछि । एहना स्थिति मे ई कहल जा सकैत अछि जे भाषा काया थिक त विचार आत्मा । साधारणतया देखल गेल अछि जे विचार सभ विषय मे निहित रहैत अछि आ सभ विषय कें वाह्य कलेवर भाषाक सहायता लेमय पड़ैत छैक । अतएव भाषा विज्ञान कें कला साहित्य आ विज्ञान आदिसँ सम्बन्ध स्वाभाविक अछि । तथापि उच्च कक्षाक साहित्यक विद्यार्थी सभक लेल भाषाविज्ञान विषय पाठ्यक्रम मे निर्धारित भेलाक संग संग उन्नीसम शताब्दी मे भाषाविज्ञान पर विशेष अनुसंधान भेला सँ एक समस्या इहो उत्पन्न भेल जे भाषाविज्ञान विज्ञान अछि वा कला । एकर कारण ई अछि जे भाषा विज्ञान मे अनेक ठाम मनोरंजनक तथ्य भेटैत अछि । मनोरंजन कलाक अपन विशेषता थिक । एकर अतिरिक्त भाषाविज्ञान मे यत्र तत्र विकल्पात्मकता सेहो दृष्टिगत होइत अछि । एहि हेतु भाषाविज्ञान कें विज्ञान कहब कतय धरि उचित अछि । मुदा आजुक युगमे अनेक विद्वान भाषाविज्ञान कें विज्ञान कहब अधिक समीचीन बुझैत छथि । एहना स्थिति मे भाषाविज्ञान विज्ञान अछि वा कला एकर समाधान क हेतु हमरा विज्ञान एवं कलाक स्वरूप सँ अवगत होएब आवश्यक अछि ।

दार्शनिक लोकनि जीवात्माक प्रमुख विशेषता ओकर ज्ञान कें मानैत छथि । एहि ज्ञानक दू भेद होइत अछि - एक स्वतःसिद्ध आ दोसर बुद्धि ग्राह्य । स्वतः सिद्ध ज्ञानक मात्रा पशुमे बेसी होइत छैक आ बुद्धि ग्राह्य ज्ञानक मात्रा मानवमे । ई देखल गेल अछि जे कुकुर कें हेलबाक कला स्वतः जन्मे सँ अबैत छैक , मुदा मानव कें ओकरा सिखय पड़ैत अछि ।

बुद्धि ग्राह्य ज्ञान कें सेहो दू गोट भेद होइत अछि - 1. विज्ञान 2. कला ।
विज्ञान शब्दक निष्पत्ति ' वि ' उपसर्ग पूर्वक ज्ञान धातु सँ होइत अछि । एहि शब्दक शाब्दिक अर्थ अछि विशिष्ट ज्ञान । ओ ज्ञान जाहिमे हमर ज्ञान विकल्प रहित हो । ई विज्ञान आजुक अंग्रेजीक science क पर्याय बनि गेल अछि । साइन्स शब्दक धात्वर्थ True Knowledge अछि । एहि प्रकार सँ विज्ञान शब्द ध्रुव निश्चित सत्यक सूचक अछि । विज्ञान द्वारा प्राप्त ज्ञान सार्वदेशिक आ सार्वभौमिक होइत अछि । पृथ्वी सदिखन चलैत छैक , ई सत्य थिक। ई सत्य सार्वकालिक आ सार्वदेशिक छैक। पृथ्वीक गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत संसारक लेल सभ काल मे समान अछि । एहि सँ निष्कर्ष निकलैत अछि जे विज्ञानक नियम सर्वत्र लागू होइत छैक। एहिमे गुंजाइश नहि रहैत छैक ।

एहि रूपसँ हम देखैत छी त ज्ञात होइत अछि जे भाषाविज्ञान ओहि अर्थमे विज्ञान नहि अछि जाहि अर्थमे गणित , भौतिक विज्ञान आ जैविकी। मुदा विशेष ज्ञानक दृष्टिसँ भाषाविज्ञान निश्चित रूपसँ विज्ञान थिक , किएक त एहिमे हमरा सभ भाषाक विशेष ज्ञान प्राप्त करैत छी । मुदा एतेक अवश्य कहल जाएत जे भाषाविज्ञान पूर्णतया विकसित नहि भए पौलक अछि । इएह कारण थिक जे उन्नीसम शताब्दीक भाषा वैज्ञानिक बॉप, रास्क आ ग्रीम क द्वारा ' ध्वनि - नियम ' क स्थापना क बाद जे भाषाविज्ञान कें विज्ञान कहल गेल छल

ताहू आधार मे परिवर्तन भए गेल । कारण  ध्वनि नियम सेहो अपवाद रहित नहि रहल। एहि हेतु ' ग्रिम नियम ' मे सेहो ग्रासमैन आ बर्नर अपन अपन नियमानुसार  सुधार  कएलनि । मुदा नव  विशेष  ज्ञानक  प्रकाश मे पुरान सिद्धांतक खंडन  भेला सँ  विज्ञानक  कोनो विरोध नहि अछि। एकर  कारण  ई अछि जे नव नव आविष्कारसँ पुरान  वैज्ञानिक  आविष्कारमे सेहो  परिवर्तन होइत रहल अछि ।  वास्तविकमे  इएह विशेष विज्ञान थिक ।

दोसर बात ई अछि  जे  1930 ई० क उपरांत वर्णनात्मक भाषाविज्ञान कें  पुनः महत्व देल गेल अछि ।  एहि कारण सँ  क्रमशः  भाषाविज्ञान  पूर्ण विज्ञान  बनबाक  दिस द्रुतगतिसँ  अग्रसर  भए रहल  अछि । जखन सँ  ध्वनिक क्षेत्रमे  नव नव  यंत्र सभक  आधार  पर  नव  नव  परीक्षण  प्रारंभ  भेल आ  प्राप्त  निष्कर्ष  पूर्णतया  नियमित  होमए लागल  तखन सँ  भाषाविज्ञान  पूर्ण विज्ञानक कोटि मे  प्रतिष्ठित  भए  गेल  अछि  ।

तेसर  बात  ई  अछि  जे  कोनो  विज्ञानक  एक विशेषता  प्रयोगात्मक  होएब  सेहो  छैक  ।  अमेरिकाक विद्वान  ब्यूम्फील्डक  बादसँ  अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक लोकनि  ध्वनिग्राम - विज्ञान  एवं रूपग्राम -  विज्ञान आदिक संगहि  संग  भाषा विज्ञानक  एक  नव  पद्धति  प्रायोगिक भाषा विज्ञानक  विकास  बड़  तीव्र  गति सँ कएलनि अछि ।  एहि  पद्धति मे  भाषाविज्ञान  जाहि तीव्रता सँ  प्रयोगशाला  सभक  विषय  बनल  जाइत  अछि  आ  ओकरा  लेल  जतेक बेसी  यंत्रक विकास भेल छैक  तकरा  ध्यान मे  रखला सँ ज्ञात  होइत  छैक जे  भाषाविज्ञान  पूर्ण विज्ञान  थिक ।

चारिम  बात  ई  अछि जे आई -  काल्हि समाजविज्ञान  ,  मनोविज्ञान ,  राजनीतिविज्ञान आदि  शास्त्रीय विषय  सभकें  जखन  विज्ञान  कहल  जाइत अछि त भाषाविज्ञान  कें विज्ञान कहब  समीचीन  अछि ।  एकर कारण  ई अछि जे जहिना  विज्ञान मे  नियम आ  कार्य - कारण - भावक  आधार  पर सभकाज  चलैत  अछि तहिना भाषाविज्ञानमे  सेहो  नियम आ कार्य - कारण भावक  आधार  सिद्धांतक  प्रदर्शन  होइत  अछि ।

कलाक क्षेत्र  सीमित होइत अछि , किएक त कलाक  सम्बन्ध  मानव  रचित  वस्तु वा  विषय सँ होइत  छैक । इएह  कारण  छैक जे  कला व्यक्तिनिष्ठ क संग  संग  देशनिष्ठ एवं कालनिष्ठ सेहो होइत अछि  ।  कविता , चित्र , संगीत  सार्वदेशिक होइतो  अपन अपन  देश , काल आ व्यक्तिक रूचिक  अनुसार  सभतरि  एकर महत्व होइत छैक। एक दिस  मणिपुर  आ  गुजरातक नृत्य अछि त दोसर  दिस  रूसक ।  एक  दिस भारतीय संगीत अछि त दोसर दिस  अंग्रेजी ।  कलाक अंतर्गत ई सभ  अछि , मुदा भारतीय संगीत जे माधुर्य  एक भारतीयक समक्ष उपस्थित कए ओकर हृदय कें झंकृत कए  दैत  अछि , ओतेक अंशमे अंग्रेजी संगीत  नहि । एहि  प्रकार सँ  अंग्रेज नागरिकक भावना  अपन संगीतक विपक्ष मे होइत छैक । एवं प्रकारें  एक देशक क्षेत्र विशेषक गीतक प्रति सेहो भावना मे अंतर देखल जाइत अछि , यथा - मिथिलाक जट - जटिन गीत नृत्यक जाहि माधुर्यक अनुभव एक मैथिल कें होइत छैक ओ एक आदिवासी कें नहि । ठीक ओहिना छोटानागपुरक आदिवासी  नृत्यक  जाहि माधुर्यक अनुभव ओहि ठामक  एक आदिवासी कें  होइत छैक ओ एक मैथिल कें नहि ।

उपर्युक्त  विवेचनसँ  ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे एक देश  वा एक काल मे  कलाक जे  मापदंड होइत  छैक से आवश्यक नहि छैक जे  दोसर देशमे वा  दोसर  कालमे  वा दोसर  क्षेत्रमे ओएह  मापदंड रहैक ।  कलाक इएह विप्रतिपत्ति होइत छैक । एहिमे  इएह विकल्प  अछि ।

कलाक सम्बन्ध  हृदयक रागात्मिका  वृत्ति सँ होइत अछि ।  ओहि मे  हृदय कें सौंदर्यक अनुभूति होइत  छैक । ओहिमे  व्यक्तिक मनोरंजन होइत छैक ।  वास्तविकमे त कलाक उद्देश्य वैह सौन्दर्यानुभूतिक  संग संग मनोरंजन करब होइत छैक  ।

उपर्युक्त  विवेचना सँ  ई ज्ञात होइत अछि जे भाषाविज्ञान  कला नहि अछि , किएक  त विज्ञान क उद्देश्य  शुद्ध ज्ञान अछि आ कलाक ध्येय व्यवहार ज्ञान  , मनोरंजन आ  उपयोगिता । एहि प्रकारसँ  कला  सौंदर्य मिश्रित

रहलाक कारणें मनोरंजनात्मक आ उपयोगात्मक सेहो अछि । कलामे इएह दुनू पक्ष प्रधान छैक , मुदा विज्ञान सँ सर्वप्रथम लक्ष्य शुद्ध ज्ञान अछि । कलामे निश्चयात्मकताक तिल मात्रो गुंजाइश नहि रहैत छैक ।

एतावता ज्ञात होइत अछि जे भाषाविज्ञान विज्ञानक संग संग कला सेहो थिक । कला हमर ज्ञान पिपासा कें शांत करैत अछि आ संगहि संग विज्ञान रुपमे प्राप्त ज्ञानसँ भाषाक शुद्ध प्रयोग आदिमे सेहो सहायता पहुँचबैत अछि । एहि दृष्टिसँ भाषाविज्ञान मे कलाक तत्व उपयोगिता आ मनोरंजनात्मकता सेहो विद्यमान अछि । एहि हेतु भाषाविज्ञान विज्ञान रहितो कलाक विशिष्ट गुणसँ समन्वित अछि ।